Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11526908

Roll No. 23261028043
Total Mark 52/75.00

Exam BA_V_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A080501T - Economic Growth and Development

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	3/5						
1B	3/5						
1C	3/5						
1D	4/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	3/5						
2	0/15						
3	0/15						
4	10/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	0/15						
9	10/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-I

Date of Exam: 2/12/25 Shift: III Room No.: 22

Paper Code: A080501T Subject: Economics Year/Sem.: 5th

Name of Candidate: Devansh Pandey

Roll No.: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

Signature of Candidate: Devansh Pandey

Signature of Invigilator

COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures Max. Marks

Total Marks in Words

A 0 8 0 5 0 1 T

Paper Code

Signature of Evaluator

PART-III

Course: B.A.

Session: 2025-26 Year/Semester: 5th sem

Subject: Economic growth and development

Paper Code: A 0 8 0 5 0 1 T

Exam Date: 0 2 1 2 2 0 2 5

Name of Candidate: DEVANSH PANDEY

Father's Name: SATYAPRAKASH PANDEY

महाविद्यालय का कोड College Code: K N 0 4

परीक्षा केन्द्र का कोड Exam Centre Code: K N 0 4

परीक्षा का प्रकार Type of Exam: संस्थागत Regular (marked) / भूतपूर्व छात्र Ex Student / व्यक्तिगत Private / Back paper Exam

ANSWER BOOKLET NO.

11526908

A 0 8 0 5 0 1 T

Paper Code

PART-IV

नामांकन संख्या Enrollment Number: C S J M A 2 3 0 0 0 1 0 4 5 1 7

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 3 2 6 1 0 2 8 0 4 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 8 0 5 0 1 T

Signature of Candidate: Devansh Pandey.

Signature of Invigilator

C.S Facsimile

COE Facsimile

नोट : 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें। 2. बॉक्स में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जाये।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method: ① ● ③ ④

Incorrect method: ✓ ✗ ◉ ⊘

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जावेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कोपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over paper should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कोपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटफिक केल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

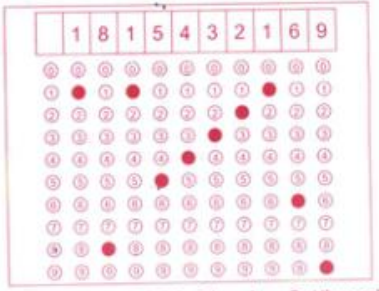

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three column

A 0 8 0 5 0 1 T

01

Section → 'A'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(a)

आर्थिक विकास- आर्थिक विकास से आशय उस विकास से है जिसमे उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी बल दिया है जाता है। यह मुख्यतः आर्थिक वृद्धि और समावेशी विकास का समायोजन होता है।

विशेषताएं - इसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं -

1.) आर्थिक विकास आर्थिक वृद्धि और समावेशी विकास का समायोजन होता है।

2.) यह मात्रात्मक + गुणात्मक होता है। अर्थात मात्रा के साथ-साथ उसके स्तर में भी परिवर्तन लाता है।

3) आर्थिक विकास का मापन HDI (Human development Index) आदि मापको से किया जाता है।

4.) आर्थिक वृद्धि के विपरीत यह समाज पर व्यापक प्रभाव उत्पन्न करता है। आर्थिक विकास का मुख्य बिंदु यह है कि उसका प्रयोग न [illegible] उत्पादन बल्कि उत्पादकता को बढ़ाने में [illegible] करते हैं।

5) उदाहरणार्थ → GDP के साथ-साथ मानव पूंजी में वृद्धि आर्थिक विकास का द्योतक है।

Do Not Write anything in this Portion

इस प्रकार आर्थिक विकास सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों को समानांतर लेते हुए आर्थिक विकास करता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(b)

आर्थिक विकास एवं आर्थिक समृद्धि में निम्न अंतर है।

	आर्थिक समृद्धि	आर्थिक विकास
	Economic development	Economic growth
1)	आर्थिक समृद्धि आर्थिक विकास के साथ सामाजिक विकास को दर्शाती है।	यह उत्पादन में वृद्धि के स्तर को दर्शाती है।
2)	आर्थिक समृद्धि का मापन HDI से करते है।	इसके मापक के रूप में GDP का प्रयोग करते हैं।
3)	यह एक दीर्घकालीन परिदृश्य देती है।	यह एक अल्पकालीन परिदृश्य देती है
4)	आर्थिक समृद्धि के लिए जीवन स्तर में वृद्धि आवश्यक है।	आर्थिक विकास उत्पादन में वृद्धि करता है।

5.	आर्थिक समृद्धि विकसित देश में अधिकतर दिखती है।	यह अल्पविकसित या विकासशील देश में दिखाई देती है।
6.	आर्थिक समृद्धि के लिए न केवल उत्पादन वृद्धि वाले सरकारी नीतियों में निवेश प्रोत्साहन भी आवश्यक होता है तथा समाज की ओर झुकी होती है।	आर्थिक विकास के लिए सरकारी नीतियाँ आर्थिक समायोजन में केवल निवेश प्रोत्साहन पर बल देती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(c)

विकास अन्तराल :- विकास अंतराल से आशय उस असमानता से है जो विकसित देशों और अल्पविकसित देशों या विकास शील देशों के मध्य दिखाई देती है। विकास अन्तराल मुख्यतः विकासशील देशों में कम राष्ट्रीय आय तथा उत्पादन में अल्पवृद्धि के कारण होता है।

विकास अंतराल के कारण निम्न लिखित हैं -

कारण :-

① राष्ट्रीय आय में कमी - विकास अंतराल की जड़ उत्पादन में वृद्धि से ही जुड़ी होती है क्योंकि प्रायः राष्ट्रीय आय में

Do Not Write anything in this Portion

परिवर्तन उत्पादन में वृद्धि या कमी से संबंधित होता है। इसलिए NI में कमी विकास अन्तराल पैदा करता है।

② जनसंख्या की अधिकता :- जनसंख्या में अधिकता मुख्यतः जनसंख्या संबंधित विकास अंतराल को जन्म देता है।

③ निवेश में कमी → निवेश में कमी के कारण भी विकास का स्तर निम्न होता है। क्योंकि निवेश राष्ट्रीय आय में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण अंग है।

④ पूँजी निर्माण → निवेश में कमी स्वाभाविकतः पूँजी निर्माण में कमी ला देता है। और गरीबी का दुश्चक्र बन जाता है।

⑤ प्रति व्यक्ति आय → इस अंतराल के मापन में भी प्रति व्यक्ति आय का मुख्यतः प्रयोग करते हैं यह कमी अंतराल को बढ़ाती है।

कारणों का हल :-

① मानव पूँजी निर्माण किया जाए
② उत्पादन में वृद्धि हो
③ जनांकिकी लाभांश का प्रयोग।
④ संसाधनों का बेहतर प्रयोग।

Paper Code A 0 0 0 5 0 1 T 05

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(a)

मानव विकास सूचकांक -

मानव विकास सूचकांक का प्रयोग सर्वप्रथम 1990 में किया गया था। यह प्रमुखतः किसी देश में होने वाली समृद्धि का द्योतक है। आर्थिक तौर पर समृद्धि का मापक होता है। इसे निम्न 3 अर्थशास्त्रीयों ने दिया-

① अमर्त्य सेन
② महबूब - उल - हक
③ रिचार्ड जोली-

मानव विकास सूचकांक निम्न 3 घटकों का औसत लेकर निकाला जाता है।

शिक्षा के मापन में 2 घटक -:

ⓐ Mean year of schooling
ⓑ Expected year of schooling

स्वास्थ्य के मापन के लिए - जीवन प्रत्याशा दर का मापन किया जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 8 0 5 0 1 T

06

जीवन स्तर के लिए, प्रति व्यक्ति आय / GNIppp

उपर्युक्त तीनों घटकों का औसत लेकर HDI का मान निकालते हैं इसका निर्धारण निम्न मानकों से होता है कि कोई देश अल्पविकसित है या विकसित-

यदि मान-

0.5 से कम → अल्पविकसित
0.5 - .699 → विकासशील
0.7 - 0.799 → विकसित
0.8 से अधिक → अति विकसित.

इस प्रकार HDI के द्वारा आर्थिक समृद्धि मापते हैं।

प्रश्नोत्तर क्रमांक:- 1 (e)

जनसंख्या वृद्धि - जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के लिए एक बड़ी समस्या उभरकर आती है। यह समस्या न केवल देश को पिछाड़ती है बल्कि इसका स्तर भी नीचे गिराती है।

इसकी सीमाओं को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं।

सीमाएँ -

① प्रति व्यक्ति आय - जनसंख्या में वृद्धि होने से आय का स्तर कम हो जाता है जो प्रति व्यक्ति आय में कमी ला देता है।

② लागतों की दरों में वृद्धि - उत्पादन में वृद्धि तो होती है परंतु अधिक जनसंख्या अधिक माँग पैदा करती है जिससे उत्पादक के लिए संसाधन नहीं हो जाते।

③ बेरोजगारी → जनसंख्या वृद्धि प्रायः बेरोजगारी को भी जन्म देती है क्योंकि रोजगार के स्तर में गिरावट आती है।

④ पुनर्निवेश → सरकार आरंभिक तौर पर तो निवेश करती है परंतु बेरोजगारी का स्तर इतना अधिक होता जाता है जिससे पुनर्निवेश की समस्या जन्म ले लेती है।

⑤ जनांकिकी लाभांश का बेहतर प्रयोग नहीं -

जनांकिकी लाभांश में यदि बेहतर निवेश नहीं हो पाता तो भी जनसंख्या नई समस्याएँ पैदा करती है।

इस प्रकार बढ़ती जनसंख्या अपनी सीमाओं से विकास में बाधा बनती है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A080501T

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(1)

गरीबी का दुष्चक्र -

प्रतिपादककर्ता → रैगनर नर्कसे

रैगनर नर्कसे ने गरीबी का दुष्चक्र का सिद्धांत दिया जिसमे उन्होंने बताया कि यदि कोई देश अल्पविकासित है तो वहाँ पर आय का स्तर निम्न होगा जिसके आगे उत्पन्न होने वाले कारक भी निम्न हो जाएंगे और एक दुष्चक्र का जन्म होगा —

उपर्युक्त वर्णित पूर्ति पक्ष एवं माँग पक्ष से रेगनर नर्कसे ने समझाया कि यदि आय का स्तर कम होता है तो क्रमशः बचत, निवेश, उत्पादन, पूँजी निर्माण में कमी आती है

जबकि माँग पक्ष में माँग में कमी आती है। इस प्रकार नर्कसे का दुष्चक्र एक अविकसित देश के असमान्य कारकों का वर्णन करता है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक 19)

गिनी गुणांक :-

गिनी गुणांक सर्वप्रथम इटालियन अर्थशास्त्री कोराडो गिनी द्वारा प्रतिपादित किया गया। इस गुणांक के द्वारा मुख्यतः किसी देश के असमानता के स्तर का आकलन किया जाता है। गिनी गुणांक को लारेंज वक्र से प्रदर्शित किया जाता है जो कि निम्न रूप में वर्णित है।

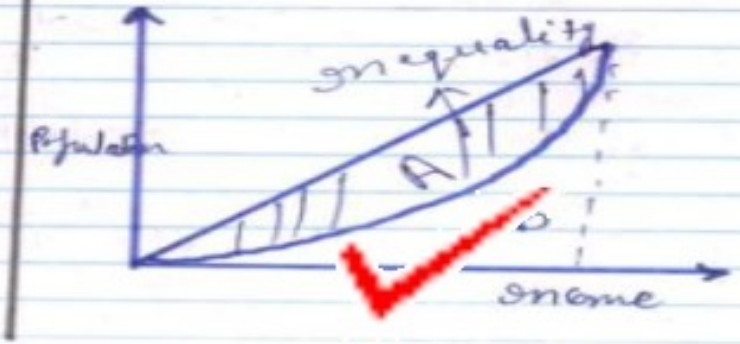

गिनी गुणांक = $\frac{A}{A+B}$

Do Not Write anything in this Portion

उपरि वर्णित लारेंज वक्र में A असमानता के स्तर तथा B आय विभाजन (Income distribution) को दर्शाता है।

गिनी गुणांक की गणना →

पूर्ण समानता — पूर्णतः असमानता

किसी देश में आय के स्तर में होने वाली असमानता को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार गिनी गुणांक यदि इसका मान 0 हो तो पूर्ण समानता को बताता है जबकि 1 होने पर पूर्णतः असमानता की स्थिति आ जाती है।

प्रश्नोत्तर क्रमांक: - 1 (b)

सतत विकास - सतत विकास से आशय उस विकास से है जिसमें संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है ताकि वे भविष्य के लिए भी सुरक्षित रखे जा सकें।

सतत विकास के उद्देश्यों को इसलिए लाया गया था ताकि सभी देश न केवल अपनी आर्थिक स्थिति बल्कि राजनीतिक और

सामाजिक स्थिति को बेहतर करने के लिए सतत विकास उद्देश्यों का पालन करें।

सतत विकास: उद्देश्य -

सतत विकास उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

① गरीबी व भुखमरी की समाप्ति - सतत विकास उद्देश्यों का मुख्य प्रकार्य यह है कि देशों से गरीबी के स्तर को समाप्त किया जाए।

② स्वच्छ जल व ऊर्जा → स्वच्छ जल और ऊर्जा की उपलब्धता लोगों को बीमारियों से दूर भगाएगी।

③ उत्पादन और उपभोग → सतत विकास का लक्ष्य यह भी निर्धारित करता है कि देश में होने वाला उत्पादन और उपभोग संतुलित रूप से चलता रहे।

④ जलीय व स्थलीय जीवों का संरक्षण - सतत विकास उद्देश्य का SDG 14 & 15 यह दर्शाता है कि इनका संरक्षण अनिवार्य है।

⑤ वैश्विक साझेदारी → यह भी SDG का मुख्य उद्देश्य है कि सभी (SDG → 17) देश मिलकर व्यापार को बढ़ावा दें।

Do Not Write anything in this Portion

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 1(i)

	विकास	अल्पविकास
1.)	विकास का तात्पर्य संसाधनों में वृद्धि तथा कुशल प्रबंधन और उपभोग है।	अल्पविकास में इन संसाधनों का आंशिक तौर पर या अकुशल प्रयोग हो पाता है।
2)	विकास का स्तर किसी भी देश में आय समानता को लाता है।	प्रायः अल्पविकास आय असमानता को लाता है।
3)	विकास का संबंध औद्योगिक क्षेत्रों से होता है।	यह कृषि प्रधानता से संबंधित होता है।
4)	विकास तकनीकि प्रगति को प्रबल करता है।	यहाँ तकनीकि प्रगति का प्रयोग अत्यल्प होता है।
5)	विकास के लिए आवश्यक है कि श्रम शक्ति का बेहतर उपयोग हो।	अल्पविकास में मानव पूंजी का बेहतर विकास संभव नहीं होता।
6)	विकास की अवस्था अल्पावस्था अल्पविकास का अगला चरण लाती है।	यह प्रारंभिक अवस्था होता है जो विकासशील होता हुआ विकास की ओर जाता है।

Section :- 'B'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 4

सतत विकास :-

सतत विकास मुख्यत: संधारणीयता का व्यापक रूप है। जब हम संसाधनों का प्रयोग बेहतर ढंग से करने लगते हैं तो अर्थव्यवस्था को एक प्रबलता प्राप्त होती है -

→ "सतत विकास का तात्पर्य उस विकास को करना है जिसमें वर्तमान मे संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है ताकि उन्हें भविष्य के लिए भी संरक्षित रखा जा सके। जो आगे आने वाली पीढ़ी के लिए विकास में सहायक बने"

सतत विकास को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है वैश्वीकरण के इस इस युग में सभी देश मिलकर कार्य करें और वे उन संसाधनों का प्रयोग करें जिनसे होने वाली हानि की मात्रा न्यूनतम या बिल्कुल ना हो इसी आधार पर संसाधनों को निम्न 2 रूपों में देखा जाता है-

संसाधन → नवीकरणीय → सतत विकास के लिए आवश्यक

संसाधन → अनवीकरणीय → अनावश्यक

Do Not Write anything in this Portion

इस प्रकार विश्व को एकजुट करने के लिए सतत विकास की श्रृंखला को निर्मित करने के लिए कुछ देशों ने मिलकर पहले 2000 में MDG को स्वीकार किया परंतु जब वैश्वीकरण का युग बढ़ा तब सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को सन् 2015 में स्वीकार किया गया। ये निम्न प्रकार हैं -

सतत विकास लक्ष्य -

SDG 1 → गरीबी की समाप्ति

SDG1 के रूप में गरीबी की समाप्ति को स्वीकार किया गया। चूँकि गरीबी देश में एक ऐसा चक्र (दुष्चक्र) बना देती है जो आय तथा निवेश पर बुरा प्रभाव डालती है।

SDG 2 → भुखमरी की समाप्ति

भुखमरी भी देशों में एक बड़ी समस्या है इसके लिए सरकार को चाहिए कि वह खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करे तथा नई योजनाओं के द्वारा समावेशी विकास को बल प्रदान करे।

SDG 3 → अच्छा स्वास्थ्य और कुशल क्षेम

SDG 3 यह कहता है कि देश में जब तक कुपोषण का रोग रहेगा तब तक विकास लगभग असंभव है। इसलिए प्रत्येक देश इसी बेहतर कर स्वास्थ्य उपलब्ध कराए।

SDG 4 → उच्च और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

उच्च तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देश में एक उत्प्रेरक की भाँति कार्य करता है। अतः प्रत्येक देश प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा में सुधार के द्वारा विकास को बल प्रदान करे।

SDG 5 → लैंगिक समानता

महिलाओं एवं पुरुषों में समानता अवश्य ही उत्पादन में वृद्धि तथा तकनीकि और नवाचार के द्वारा मानव पूँजी को बल देंगे।

SDG 6 → स्वच्छ पेयजल और स्वच्छता

विभिन्न देशों में जन्म लेने वाली बीमारियों को देखते हुए यह लक्ष्य रखा गया था। ताकि पेयजल स्वच्छता तथा वातावरणिक स्वच्छता सुनिश्चित किया जा सके।

SDG 7 → स्वच्छ एवं वहनीय ऊर्जा

ऊर्जा की उपलब्धता न केवल देश में

Do Not Write anything in this Portion

उत्पादन को बढ़ाएगी बल्कि तकनीकि, प्रौद्योगिकी, मशीनों तथा वर्तमान AI के द्वारा विकास में एक प्रमुख कारक बनी है।

SDG 8 → आर्थिक वृद्धि तथा सम्मानीय जॉब

SDG 8 का मुख्य उद्देश्य देश में उत्पन्न होने वाली बेरोजगारी के स्तर को कम करना है तथा आर्थिक वृद्धि को प्रबल करना है।

SDG 9 → नवाचार, उद्योग, अवसंरचना का विकास (I-I-I)

नवाचार, उद्योग और अवसंरचना का विकास के बिना अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में तीव्र गिरावट आएगी जिससे निवेश आवश्यक है।

SDG 10 → असमानता में कमी

असमानता केवल लैंगिक आधार पर ही नहीं बल्कि क्षेत्रीय, नस्लीय, जातीय सभी आधारों पर से समाप्त की जाए।

SDG 11 → संधारणीय शहर और समुदाय

शहरों का विकास तथा समुदायों द्वारा विकास को बल देना SDG का एक प्रमुख लक्ष्य है।

SDG 12 → उत्पादन एवं उपभोग पर बल

किसी भी देश में उत्पादन और उपभोग या माँग एवं पूर्ति में संतुलन अवश्य ही आर्थिक विकास को बल प्रदान करता है।

SDG 13 → जलवायु कार्यवाही

वर्तमान बदलते तापमान (तापमान वृद्धि → जीवाश्म ईंधन के चलते जलवायु कार्यवाही आवश्यक हो जाती है इसके लिए वैश्विक स्तर पर COP का आयोजन किया जाता है।

SDG 14 → जलीय जीवों का संरक्षण एवं संवर्द्धन

जलीय जीवों का संरक्षण जैसे कोरल रीफ आदि की संरक्षण आवश्यक है जिससे स्वच्छ जल उपलब्ध हो सके।

SDG 15 → स्थलीय जीवों का संरक्षण एवं संवर्द्धन

जलीय जीवों की भाँति स्थलीय जीवों का संरक्षण भी अनिवार्य हो जाता है।

SDG 16 → वैश्विक शांति और न्याय व्यवस्था

वैश्विक स्तर पर होने वाले विवादों और उनके समाधान के लिए बेहतर न्याय व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

Do Not Write anything in this Portion

SDG17 - वैश्विक साझेदारी

विभिन्न देश आपस में मिलकर वैश्विक साझेदारी के माध्यम से सतत विकास को बल प्रदान करें।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित बिन्दुओं के द्वारा विभिन्न देशों के मध्य आपसी संतुलन सतत विकास को उत्प्रेरित करता है।

Paper Code: A0805017

Section - 'C'

प्रश्नोत्तर क्रमांक :- 9

बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ :-

बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से आशय उन कम्पनियों से होता है जिनके द्वारा विभिन्न देशों में अपने स्वामित्व को स्थापित किया जाता है या कंपनी की शाखाओं को स्थापित किया जाता है। जबकि मुख्यालय किसी एक देश में ही होता है।

World trade Corporation के अनुसार -

बहुराष्ट्रीय कम्पनी वे हैं जो -

1. एक से अधिक देशों में हो
2. बहुराष्ट्रीय प्रबंधन रखती हो।
3. संदर्भित देश में नवाचार, विकास, उत्पादन के बन्दे
4. सदर्भित देश में उनका स्कंध स्वामित्व हो।

इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विभिन्न देशों [illegible] स्थापित होकर या वहाँ स्थापित [illegible]नियों में निवेश करके देश में [illegible] प्रकार से योगदान करने में अपनी महत्वपूर्ण निभाने में प्रयासरत रहती हैं -

Paper Code: A 0 8 0 5 0 1 7

भारतीय अर्थशास्त्र में योगदान -

उत्पादन में वृद्धि → भारतीय अर्थशास्त्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा वृहद मात्रा में विनियोग किया जाता है जिस कारण GDP में वृद्धि होती है। यही कारण है कि GDP में Manufacturing इत्पादन Sector की प्रधानता रहती है।

निवेश में वृद्धि → ये कम्पानियाँ निवेश के माध्यम से भी देश में विकास को वृद्धि प्रदान करती है। साथ ही निवेश पूँजी निर्माण को बल देकर आय के स्रोतो का सृजन करता है।

रोजगार में वृद्धि → इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा आर्थिक क्षेत्र में रोजगारो में वृद्धि होती है। चूँकि ये कम्पनियाँ उसी देश के श्रम बल का प्रयोग करती है। उदा० के लिए Apple की कंपनी भारत में लगभग कई गुना रोजगारो में वृद्धि लायी है बशर्ते ये कुशल श्रमिको की माँग करती है।

Paper Code A 0 8 0 5 0 1 T

अनुसंधान एवं विकास :

WTC के अनुसार इन कंपनियों द्वारा देशों में अनुसंधान भी किया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न कंपनियाँ भारत में तकनीकि, नवाचार, प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास को बल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

तकनीकि एवं प्रौद्योगिकी :

इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के द्वारा न केवल तकनीकि बल्कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बेहतर निवेश किया जाता है उदा० के लिए भारत में स्थापित ISRO और NASA का आपसी सहयोग और साझेदारी।

जनांकिकी लाभांश और मानव पूंजी

इन बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा Demographic dividend के बेहतर प्रयोग एवं तथा मानव पूँजी निर्माण और कुशल आवंटन तथा बेहतर उपलब्धता के भारत में विकास को तीव्र गति प्रदान की गई। हालिया तिमाही में GDP की वृद्धि दर 8% की वृद्धि से बढ़ी है। जो कि विकास का सूचक है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code A 0 8 0 5 0 1 T

22

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) -

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का तात्पर्य भी इन्हीं सन्दर्भों में लिया जाता है कि कोई एक देश द्वारा या कम्पनी द्वारा दूसरे देश की कम्पनियों का स्कंध स्वामित्व लेना या वहाँ अपने स्वयं निवेश के द्वारा कंपनी स्थापित करना प्रत्यक्ष विदेशी निवेश कहलाता है। इस निवेश के द्वारा न केवल विकास को तीव्र गति मिलती है बल्कि स्वामित्व के द्वारा भी लाभ को प्राप्त किया जाता है।

उदा-1 अमेरिका में स्थापित कोई कम्पनी भारत में स्थापित कम्पनी का इतना शेयर खरीद ले ताकि वह उसका स्वामित्व (स्कंध स्वामित्व) ले सके तथा इसका प्रबंधन कर सके। या फिर अपनी ही कम्पनी की कोई शाखा भारत में स्थापित करे जो न केवल अमेरिका को लाभांश दे बल्कि भारत को भी विकास के पथ पर आगे बढ़ाए।

FII - (विदेशी संस्थागत निवेश)

विदेशी संस्थागत निवेश से आशय उस निवेश से होता है जिसमें कोई एक देश दूसरे देश में शेयर या बाण्ड में निवेश करता है ताकि इससे बेहतर लाभांश अर्जित किया जा सके। इसके देश को तो कुछ समय के लिए लाभ [illegible] परंतु दीर्घकालिक लाभ की दशा [illegible] उत्पन्न होते है।

उदा०- उदा० के लिए, चीन के किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा भारत में रिलायंस कंपनी के शेयर या बाण्ड को खरीदना FII के अंतर्गत आता है या अमेरिका के किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा भारतीय क्षेत्र के शेयर या बॉण्ड खरीदना

इस प्रकार बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ तथा FDI और FII के द्वारा देश का आर्थिक विकास संभव होता है

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion